

-:: सुविचार (भाग 1) ::-

- कम बोलना चतुरता का लक्षण है।
- गृहण करके जो वस्तु छोड़ना पड़े, उसे पहले ही न लेना उत्तम है।
- प्रतिदिन के कार्यों की सूची बनायें।
- दैनिक चर्या की समय सारणी बनायें।
- अनावश्यक वस्तुओं को न रखें।
- वस्तुओं के निश्चित स्थान होने से उन्हें ढूँढने में समय बर्बाद नहीं होगा।
- समय का मूल्य समझने वाला ही जीवन को उन्नतिशील बना पाता है।
- 'विचार' कर लेना और जीवन में जहाँ कोई अप्रमाणित या अनैतिक कुछ हो उसे छोड़ने का प्रयास करना।
- जब हमने किसी काम को बुद्धिमत्ता से सम्पन्न करने का निश्चय कर लिया हो तब डगमगाना नहीं चाहिए, बल्कि लक्ष्य प्राप्ति के लिए सम्पूर्ण बल से प्रयत्न करना चाहिए।
- जो अपनी प्रशंसा करना पसंद करते हैं, उनमें गुणों की कमी होती है।
- माया और छाया एक समान हैं, क्योंकि दोनों भागते हुए के पीछे भागती हैं, और जो इसके पीछे पड़ता है, वह उसके पीछे भागती हैं।
- विश्व का सबसे निकृष्ट व्यक्ति वह है, जो अपना कर्तव्य जानते हुए भी उसका पालन नहीं करता है।
- ईश्वर से डरना भाग्यशाली बनने का लक्षण है। पाप करते रहने पर भी ईश्वर की दया की आशा रखना दुर्भाग्य का लक्षण है।
- उत्तम पुरुष का क्रोध क्षण मात्र, मध्यम पुरुष का दोपहर तक, अधम पुरुष का एक दिन-रात और नीच पुरुष का क्रोध जीवन भर रहता है।
- प्रतिभा शरीर को नहीं देखती, वह तो हुनर के लिए लालायित रहती है।
- वही उन्नति कर सकता है, जो स्वयं को उपदेश देता है।
- संकट में साहस से काम लेना आधी सफलता पाना है।
- संसाधन भले ही कम हों, लेकिन आत्म विश्वास भरपूर हो तो आपकी सफलता निश्चित है।
- जन्म के समय व्यक्ति संपूर्ण नहीं होता, लेकिन हर कोई कुछ न कुछ विशेषता लेकर आता है।
- जब दुःख अपनी चरम सीमा पर होता है, तब सुख ज्यादा दूर नहीं होता।
- किसी का आशीर्वाद प्राप्त करो तो हानि नहीं, परंतु किसी का अंतःकरण दुःखित कर पाप मत लेना।
- अपने साथियों द्वारा कही गई बातों पर ध्यान दें, कई बार उनके विचार सुलगते अंगारों की तरह होते हैं। आप उन्हें अपने निर्णय रूपी ठंडे पानी की कुछ बूँदे डालकर राख बना सकते हैं, या उन्हें आग के रूप में अच्छी सोच रूपी फूँक मारकर प्रज्ज्वलित कर सकते हैं।
- दस सेकण्ड का भी अपव्यय नहीं होना चाहिए।
- समय का मूल्य समझने वाला ही जीवन को उन्नति शील बना पाता है।

-:: सुविचार (भाग 2) ::-

- रूचि, उत्साह, एकाग्रता, स्वाध्याय में आवश्यक होता है ।
- जनसम्पर्क से बचना साधु के लिए आवश्यक है -(प. पू. महाकवि आचार्य श्री ज्ञान सागर जी महाराज)
- मैं तो साधक हूँ, आत्म कल्याण का मार्ग पकड़ा है उससे भटक जाता यदि प्रचार के लोभ में पड़ता तो

(प. पू. महाकवि आचार्य श्री ज्ञान सागर जी

महाराज)

- असफलता के तीन कारण:-

1. पूरा प्रयत्न न करना 2. परिश्रम से जी चुराना 3. आराम तलब होना

- स्मरण शक्ति बढ़ाने के व्यावहारिक उपाय-

- अ) पढ़ने के प्रति रूचि एवं जागरूकता
- ब) वाणी संयम या मौन का अभ्यास
- स) पढ़ने के बाद आवश्यक बिन्दुओं को नोट करना
- द) सदैव सीधे बैठने का प्रयास करना
- इ) विधायक सुझाव 'मेरी स्मृति अच्छी है'
- फ) स्मृतिगत विषय को बार-बार दोहराना चाहिए।

ग) मस्तिष्क से पूछें कि कल आपने क्या पढ़ा ? मस्तिष्क से पूछने पर वह आपकी पूरी फाइल सामने खोल देगा जो आपने मस्तिष्क में फीड की थी।

- मन की एकाग्रता से क्षयोपशम बढ़ता है-

(प. पू. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज)

- मैं स्वयं ही संयम और तप के द्वारा अपनी इच्छाओं का दमन करूँ, बजाय इसके कि अन्य लोग बंधन और वध के द्वारा मेरा दमन करें।
 - अपनी आत्मा के साथ ही युद्ध कर, बाहरी शत्रुओं से युद्ध करने से क्या लाभ ? आत्मा को आत्मा के द्वारा जीतने वाला व्यक्ति सुख पाता है।
 - हमें अपनी चेतन आत्मा का जीर्णोद्धार करना है। इसके लिए संग्रह की आवश्यकता नहीं, त्याग और तप की आवश्यकता है। -
 - वैज्ञानिक शोध करते समय सब कुछ भूल जाते हैं, तभी उन्हें अविष्कार का लाभ होता है।
 - श्रेष्ठ मित्रों का साथ उन्नति में सहायक होता है, पर ऐसे व्यक्ति का मिलना कठिन है, जो कड़वी समालोचना कर सके खरी सलाह दे सके, फटकार सके और खतरों से सावधान कर सके।
 - समय हाथ से निकल जाने पर केवल विस्मय हाथ लगता है।
 - कोई ऐसी घड़ी नहीं है जो गुजरे हुए घंटों को फिर से बजा दे।
 - किसी भी कार्य की सफलता के लिए उस कार्य के प्रति जुनून होना जरूरी है।
 - समर्पण की पीड़ाएँ स्वच्छन्दता के सुखों से श्रेयस्कर है -
- (प. पू. मुनि श्री क्षमासागर जी महाराज)
- जहाँ अपवाद का बादल छा रहा हो, वहाँ घबड़ाना मूर्खता है, वह वातावरण तो तुम्हारा उपकारक है, धीर बनाने वाला है।
 - अपने आत्म तत्व को देखो और प्रसन्न रहो।